# रसायन शास्त्र - परिचय की तलाश

पी. बालाराम

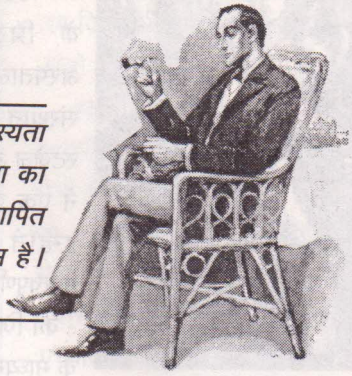

शरलॉक होम्स : एक पेंटिंग

*रॉयल सोसायटी ऑफ केमेस्ट्री ने शरलॉक होम्स को असाधारण मानद सदस्यता प्रदान की है। शरलॉक होम्स दरअसल कहानियों व उपन्यासों की एक श्रृंखला का जासूस पात्र रहा है। रॉयल सोसायटी द्वारा शरलॉक होम्स को पुनः स्थापित करना शायद लोगों के मन में रसायन शास्त्र की छवि को चमकाने का प्रयास है। वैसे तो यह विषय पहचान के गंभीर संकट में फंसता नज़र आ रहा है।*

कुछ सप्ताह पूर्व इंजीनियरिंग कॉलेजों में रसायन शास्त्र पढ़ाने वाले अध्यापकों के एक समूह ने मुझे अपनी एक कार्यशाला के उद्घाटन भाषण हेतु आमंत्रित किया था। कार्यशाला का विषय था - 'इंजीनियरिंग रसायन का संशोधित पाठ्यक्रम'। अध्यापकों ने अपनी बात दो टूक शब्दों में रखी। उन्हें डर था कि इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम में से धीरे-धीरे रसायन शास्त्र को हटा दिया जाएगा और इस तरह से रसायन के अध्यापक फालतू हो जाएंगे। हां, यदि वे जैव टेक्नॉलॉजी पढ़ाने लगें, तो बात अलग है। लिहाज़ा मेरी भूमिका स्पष्ट थी - मुझे अपने भाषण में यह बताना था कि इंजीनियरिंग शिक्षा में रसायन शास्त्र का कितना महत्व है। उम्मीद यह थी कि कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में बैठे प्रशासनिक अधिकारी मेरे भाषण से प्रभावित हो जाएंगे। इस तरह की अन्य बैठकों की तरह यह भी वैसे ही गुज़र गई। यह भी लगभग तय है कि इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों में रसायन शास्त्र का पतन जारी रहेगा।

रसायन शास्त्र ने पिछली सदी में जितना कुछ अर्जित किया था, यदि उसका आधा भी इस सदी में करना चाहता है, तो उसे सबसे प्रतिभावान युवा वैज्ञानिकों को आकर्षित करने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। और इसके लिए छवि बहुत महत्व रखती है।

संयोग की बात है कि इसके कुछ ही दिन बाद मेरा ध्यान एक खबर पर गया कि रॉयल सोसायटी ऑफ केमेस्ट्री ने शरलॉक होम्स को असाधारण मानद सदस्यता प्रदान की है। शरलॉक होम्स दरअसल कहानियों व उपन्यासों की एक श्रृंखला का जासूस पात्र रहा है। आर्थर कॉनन डायल ने अपनी लेखनी से इस पात्र को अमर कर दिया है। शरलॉक होम्स न सिर्फ एक शौकिया रसायनज्ञ था, बल्कि वह अपराध की खोज में रसायन के महत्व को पहचानता था। संभावना इस बात की है कि अपराध विज्ञान की उत्पत्ति आर्थर कॉनन डायल के रोचक उपन्यासों के पृष्ठों में हुई हो। रॉयल सोसायटी द्वारा शरलॉक होम्स को पुनः स्थापित करना शायद लोगों के मन में रसायन शास्त्र की छवि को चमकाने का प्रयास है। वैसे तो यह विषय पहचान के गंभीर संकट में फंसता नज़र आ रहा है।

कुछ ही समय पहले नेचर पत्रिका ने रसायन शास्त्र को सफलताओं में दफन विषय की संज्ञा दी थी। पत्रिका ने आगे कहा था - इस विषय की प्रतिष्ठा कोई मामूली मुद्दा नहीं है। रसायन शास्त्र ने पिछली सदी में जितना कुछ अर्जित किया था, यदि उसका आधा भी इस सदी में करना चाहता है, तो उसे सबसे प्रतिभावान युवा वैज्ञानिकों को आकर्षित करने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। और इसके लिए छवि बहुत महत्व रखती है। मैंने भी कुछ वर्ष